

---

# Shri Mangirishashtakam

---

## श्रीमङ्गिरीशाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : mAngirIshAShTakam

File name : mAngirIshAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc\_shiva

Author : from Shri Mangeshi Dev Sansthanam, Goa

Proofread by : Sunder Hattangadi

Source : Shri Chitrapura Stuti Manjari, 3rd ed. 2008

Acknowledge-Permission: Shri Chitrapur Math - Publications Committee <https://chitrapurmath.net/>

Latest update : March 2, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीमाङ्गिरीशाष्टकम्



विश्वेश्वर प्रणत दुःखविनाशकारिन्  
सर्वेष्टपूरक परात्परपापहारिन् ।  
कुन्देन्दुशङ्खधवलश्रुतिगीतकीर्ते  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ १ ॥

गङ्गाधर स्वजनपालनशोकहारिन्  
शक्रादिसंस्तुतगुण प्रमथाधिनाथ ।  
खण्डेन्दुशेखर सुरेश्वर भव्यमूर्ते  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ २ ॥

त्रैलोक्यनाथ मदनान्तक शूलपाणे  
पापौघनाशनपटो परमप्रतापिन् ।  
लोमेशविप्रवरदायक कालशत्रो  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ३ ॥

भो भूतनाथ भवभञ्जन सर्वसाक्षिन्  
मृत्युञ्जयान्धकनिषूदन विश्वरूप ।  
भो सङ्गमेश्वर सदाशिव भालनेत्र  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ४ ॥

अम्भोजसम्भव-रमापति -पूजिताङ्गे  
यक्षेन्द्रमित्र करुणामयकाय शम्भो ।  
विद्यानिधे वरद दीनजनैकबन्धो  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ५ ॥


रुद्राक्षभूषिततनो मृगशावहस्त  
मोहान्धकारमिहिर श्रितभालनेत्र ।  
गोत्राधरेन्द्र-तनयाङ्कित-वामभाग  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ६ ॥

कैलासनाथ कलिदोष विनाशदक्ष


धत्तूरपुष्प परमप्रिय पञ्चवक्र ।  
श्रीवारिजाक्षकुलदैवत कामशत्रो  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ७ ॥  
योगीन्द्रहृत्कमलकोश सदानिवास  
ज्ञानप्रदायक शरण्य दुरन्तशक्ते ।  
यज्ञेशयज्ञफलदायक यज्ञमूर्ते  
भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥ ८ ॥  
ये माङ्गिरीश-चरण-स्मरणानुरक्तां  
माङ्गीश्वराष्टकमिदं सततं पठन्ति ।  
तेऽमुष्मिकं सकल सौख्यमपीह भुक्त्वा  
देहान्तकालसमये शिवतां व्रजन्ति ॥  
॥ भो माङ्गिरीश तव पादयुगं नमामि ॥  
इति श्रीमाङ्गिरीशाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Sunder Hattangadi

---

——  
*Shri Mangirishashtakam*

pdf was typeset on September 17, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

